लखनऊ, शनिवार, 17 फरवरी 2018

दैनिक जागरण

लखनऊ

स्थापना दिवस पर कर्मचारी सम्मानित

जागरण संवाददाता, लखनऊ : गन्ने के खेतों में ही बंदगोभी, फूलगोभी व चने की खेती जैसी फसलों का उत्पादन कर किसान अपनी आय को दोगुनी कर सकते हैं। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास सराहनीय है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. आरके सिंह शुक्रवार को बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

रायबेरली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना दिवस पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान उन्होंने कहा कि गन्ना किसानों के हित के लिए कम लागत में अधिक उत्पादन का लक्ष्य सामने रखकर काम करना चाहिए। इससे पहले संस्थान के निदेशक डॉ.अश्विनी कुमार पाठक ने पिछले 66 साल कर उपलब्धियों और किसान हित में किए गए कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्थान के प्रवक्ता डॉ.एके साह ने बताया कि संस्थान की स्थापना 1952 में स्थापना में की गई थी और वैज्ञानिक प्रयासों से इसमे बढ़ोतरी हो रही है। मुख्य अतिथि संस्थान के कर्मचारी अभिषेक को सम्मानित किया तो कैदी अशर्फीलाल और परमिंदर के अलावा किसान आदित्य नाथ सिंह, अब्दुल हादी, अवधेश वर्मा, ब्रजेश वर्मा और होशराम वर्मा को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर किसानों के लिए प्रदर्शनी के साथ परिसर के भ्रमण का भी इंतजाम किया गया था।

कर्मचारी अभिषेक को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डॉ . आर के सिंह व निदेशक अश्विनी पाठक

हिन्दुस्तान

लखनऊ •शनिवार •17 फरवरी 2018

यूपी देश का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक राज्य

गन्ना संस्थान

लखनऊ | निज संवाददाता

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के 66 वर्ष के अथक प्रयास का नतीजा है कि आज यूपी देश का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक राज्य बन गया है। संस्थान ने गन्ना क्षेत्र में 2.55, गन्ना उत्पादन में 4.06, गन्ना उपज में 1.82 तथा चीनी परता में 1.11 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। गन्ना किसानों की आय दोगुना करने के लिए संस्थान को गन्ना उत्पादकता को 72.3 टन प्रति हेक्टेयर से बढ़ाकर 78.8 टन प्रति हेक्टेयर एवं चीनी परता 10.61 से बढ़ाकर 11 टन प्रति हेक्टेयर करने की जरूरत है। यह बातें शुक्रवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के 67 वें स्थापना दिवस समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. आरके सिंह ने कहीं।

गन्ना खेती में उपलब्धि के लिए किसान सम्मानित : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के 67वें स्थापना दिवस के मौके पर उत्पादकता व सहयोग के लिए किसानों व कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इस मौके संस्थान के महानिदेशक डॉ. आरके सिंह ने संस्थान के प्रसार कार्यक्रम के तहत गन्ना खेती में सराहनीय उपलब्धि के लिए सीतापुर तीन कृषकों तथा लखनऊ के दो किसानों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।. साथ ही विभिन्न श्रेणियों के संस्थान में कार्यरत 10 कर्मचारियों को सम्मानित किया। संस्थान में मजदूरी करने वाले आदर्श कारागार के दो कैदियों परमिंदर और अशर्फीलाल को सम्मानित किया।

संस्थान के प्रसार प्रभारी डॉ. एके शाह ने किसानों को नई तकनीकि और मशीनों के बारे में जानकारी दी। नाली विधि द्वारा बुवाई एवं गन्ना बीज उत्पादन करने वाले सीतापुर के खंभापुर निवासी आदित्य नाथ सिंह, बिसवां सीतापुर के अब्दुल हादी को को गन्ना के साथ सह-फसलों की उन्नत खेती के लिए व बिसवां सीतापुर के अवधेश वर्मा को गन्ना के साथ सब्जियों की उन्नत खेती के लिए, मदरपुर लखनऊ के ब्रजेश वर्मा को मधुमक्खी पालन द्वारा 300 टन शहद का उत्पादन करने के लिए तथा मटेरा, लखनऊ के होश राम वर्मा को समन्वित फसल पद्धति के अंतर्गत मधुमक्खी पालन एवं दुग्ध उत्पादन के लिए सम्मानित किया गया।

NBT
नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स। नई दिल्ली/लखनऊ। शनिवार, 17 फरवरी 2018

'गन्ना उत्पादन में 2022 तक नम्बर-1 होगा भारत'

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने 67वां स्थापना दिवस मनाया

एनबीटी, लखनऊ : गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में भारत को जनक माना जाता था, लेकिन वक्त के साथ प्रौद्योगिक विकास की रफ्तार धीरे पड़ने से ब्राजील जैसे देश ने पहला पायदान हासिल कर लिया है। इस चुनौती से निपटने के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्था के वैज्ञानिकों ने भारत को 2022 तक गन्ना उत्पादन क्षेत्र में प्रथम दर्जा हासिल करने का लक्ष्य रखा है।

तेलीबाग इलाके में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने शुक्रवार को अपने 67वें स्थापना दिवस के मौके पर गन्ना किसानों और उत्कृष्ट सेवा देने वाले वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के असिस्टेंट डायरेक्टर आरके सिंह ने किसानों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि ब्राजील ने खेती प्रौद्योगिक में तेज से विकास किया है। इसे देखते हुए गन्ना अनुसंधान संस्थान भी अपने गन्ना किसानों तक हाईटेक मशीनों को पहुंचाना चाहता है। इसके लिए लोगों को प्रोत्सहित करने के साथ ही प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संथान के डायरेक्टर एडी पाठक ने बताया कि, नई बीज किस्मों पर हमारे साइंटिस्ट रिसर्च तो कर ही र रहे हैं, पर साथ ही वह अब इंजीनियरिंग की मदद से गन्ना खेती से जुड़े तकनीक को बेहतर करने का प्रयास कर रहे हैं।

कार्यक्रम में नहीं पहुंचे कृषि मंत्री: भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने यूपी के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। लेकिन यूपी बजट 2018-19 के विधानभवन में पेश होने के कारण कृषि मंत्री कार्यक्रम में नहीं पहुंच सके।

गन्ना किसानों और उत्कृष्ट सेवा देने वाले वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

ट्रेंड गन्ना किसानों की बन रही चेन

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान किसानों को आत्मनिर्भर बनाने लिए खुद ही उन्हें वैज्ञानिक विधि से खेती करने का प्रशिक्षण दे रहा है। इसके तहत संस्थान ने सीतापुर जिले में ब्लाक स्तर पर कुछ किसानों को टेक्निकल तरीके से खेती करने की विधि सिखाई है। ट्रेंड हुए किसान इसका लाभ क्षेत्र के अन्य गन्ना किसानों तक पहुंचा रहे हैं। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एके शाह ने बताया कि जो किसान संस्था की विधि से खेती करना सीख जाते हैं, जिसके बाद खुद में ही साइंटिस्ट के तौर पर अपनी पहचान कायम कर लेते हैं।

इस विधि से करें खेती, मिलेगा ज्यादा लाभ

किसान से साइंटिस्ट अब्दुल हादी का कहना है कि क्षेत्र के दूसरे किसानों को उन्नत गन्ना खेती के लिए नाली विधि से गन्ना खेती करनी चाहिए। जहां एक फीट चौड़ी मेढ़ बना उसकी दो पक्तियों में उन्नत बीज किस्मों की बुवाई करवाई जाती है। साथ ही गन्ने की फसल में खाद से लेकर पानी की मात्रा तक की जानकारी दे रहे हैं। संस्थान का दावा है कि, आने वाले वक्त में गन्ना बेल्ट वाले क्षेत्रों में और भी साइंटिस्ट किसान खड़े किए जाएंगे, जिससे प्रदेश में उन्नत गन्ना किसानी को बढ़ावा मिल सके।

अमर उजाला

लखनऊ
शनिवार, 17 फरवरी 2018

अधिक गन्ना उत्पादन से ही दोगुनी होगी किसानों की आय

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) ने शुक्रवार को अपना 67वां स्थापना दिवस मनाया। इसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. आरके सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पादन बढ़ा कर किसानों की आय दोगुनी की जा सकती है। डॉ. सिंह का कहना था कि गन्ना किसानों की आय को दोगुना करने के लिए उत्पादकता को 72.3 टन से बढ़ाकर 78.8 टन प्रति हेक्टेयर एवं चीनी परता 10.61 से बढ़ाकर 11 टन प्रति हेक्टेयर करना होगा।

आईआईएसआर के निदेशक डॉ. एडी पाठक ने बताया कि चीनी उद्योग की समस्याएं दूर करने की हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। इस बीच दैनिक श्रमिकों के रूप में संस्थान में काम कर रहे दो कैदियों परमिंदर और अशर्फी लाल को उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित किया गया। गन्ना की खेती के लिए सीतापुर के आदित्यनाथ सिंह, गन्ना के साथ सह फसल मक्का, चना, मूंगफली उगा क ज्यादा कमाई करने के लिए अब्दुल हादी और अवधेश वर्मा को सम्मानित किया गया। लखनऊ के ब्रजेश वर्मा और होशराम वर्मा मधुमक्खी पालन केलिए सम्मानित हुए। ब्यूरो

the pioneer
LUCKNOW | SATURDAY | FEBRUARY 17, 2018

'India has become self-reliant in sugar production'

Lucknow (PNS): ICAR-Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) celebrated its 67th Foundation Day on Friday. Speaking at the inaugural function, Dr RK Singh, ADG (commercial crops), ICAR, informed newspersons that the area, production and productivity of sugarcane and sugar recovery in India had increased by 2.55, 4.06, 1.82 and 1.11 times, respectively during the past 66 years as a result of which it had become self-reliant in sugar production by producing 28 million tonnes of it.

In this accomplished scenario the IISR has contributed considerably. But to double the income of the sugarcane farmers, the present productivity of sugarcane has to be enhanced from the present level of 72.3 to 78.8 tonnes per hectare and sugar recovery from 10.61 to 11.00 tonnes per hectare. At the inaugural function three farmers of Sitapur which included Aditya Nath Singh, Avadhesh Verma and Abdul Hadi and two farmers of Lucknow viz Brajesh Verma and Hosh Ram Verma were awarded for their innovative and scientific farming. On the occasion 10 employees of the Institute were also honoured by being given the best worker award in different categories. Two jail inmates, Asharfi Lal and Parminder, were also honoured for their arduous services in the Institute. Four publications of the Institute were also released on the occasion. Awareness and training of farmers on PPV and FRA by KVK of IISR and a technology and machinery demonstration mela were also organised on the occasion. About 400 farmers from various districts of Uttar Pradesh participated in the training and mela. Director of ICAR-IISR AD Pathak highlighted the achievements they had made during last year. Pathak said that the large-scale adoption of IISR technologies i.e. improved cane varieties, three-tier seed production technique, STP, trench method of planting, intercropping with sugarcane, bio-intensive management of top borer and red rot, sugarcane machines, training module for cane managers etc had helped UP in emerging as the largest sugar-producing state of the country. Due to the adoption of IISR technologies the farmers were now earning an additional profit of Rs 2,000 crore every year, he said. Dr Pathak also reminded the commitment of IISR to address the emerging challenges in sugarcane and the sugar sector. During Technology and Machinery Demonstration Mela the farm machinery developed at the Institute for mechanisation of sugarcane agriculture was exhibited and live demonstrations were also performed in front of the farmers.